

## पाठ 20 अध्याय 16, 17, और 18

पिछले सप्ताह हमने गिनती 15 का समापन इस बात का विस्तार से अध्ययन करके किया कि इस्राएल के लोगों में परमेश्वर के नियमों और आज्ञाओं की अनदेखी करने की प्रवृत्ति के लिए परमेश्वर ने क्या उपाय किया है। मूसा के नए दिए गए नियमों के प्रति इस्राएल में बहुत से लोगों ने जो लापरवाही बरती थी, उसका सार सब्त के दिन आग के लिए लकड़ियाँ इकट्ठा करने वाले व्यक्ति की कहानी में मिलता है। और, दुखद परिणाम यह हुआ कि सब्त के दिन आग न जलाने या काम न करने के परमेश्वर के आदेश के विरुद्ध इस अपराध के लिए उस व्यक्ति को मृत्युदंड दिया गया। इस घटना से यह स्पष्ट है कि उस व्यक्ति ने वास्तव में आग नहीं जलाई थी, उसने केवल लकड़ियाँ इकट्ठी की थीं। इसलिए, इस कहानी ने समान रूप से उन सिद्धांतों को उजागर किया कि परमेश्वर की अवज्ञा मृत्यु लाती है, और यह कि इरादा, भले ही इच्छित कार्य कभी पूरी तरह से साकार न हो, शायद परमेश्वर द्वारा पाप की गंभीरता और इसलिए उससे जुड़े परिणाम को निर्धारित करने में प्राथमिक भूमिका निभाता है।

और, परमेश्वर ने जो उपाय बताया, वह वास्तव में एक स्मरण शक्ति थी। यह हर इस्राएली को यह याद दिलाने वाला एक दृश्य था कि परमेश्वर अपने नियमों के प्रति गंभीर है, और अवज्ञा के परिणाम गंभीर हो सकते हैं। **झालर**, जिसे अंग्रेजी अनुवाद में आमतौर पर फ्रिज कहा जाता है, वह स्मरण शक्ति थी।

हर इस्राएली पुरुष को **झालर** पहनना था, सफेद लिनन के धागों से बना एक लटकन, जिसे एक नीले ऊनी धागे के चारों ओर लपेटा जाता था, और फिर अपने कपड़ों के कोनों पर पहना जाता था। हालाँकि शास्त्रों में इस मामले में महिलाओं के मुद्दे को विशेष रूप से संबोधित नहीं किया गया है, लेकिन महिलाओं के लिए अपने कपड़ों पर **झालर** लगाना वैकल्पिक और स्वीकार्य माना जाता था।

लोगों पर **झालर** का वांछित प्रभाव बिल्कुल भी अलौकिक नहीं था। **झालर** के पास कोई शक्ति नहीं थी, और अनुष्ठान में उनका कोई स्थान नहीं था। इसके बजाय वे इस्राएलियों को तोरह के आदेशों की याद दिलाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मानव इंद्रियों में से सबसे शक्तिशाली, दृष्टि का उपयोग करते थे ताकि वे ईश्वर को नाराज़ करने का जोखिम न उठाएँ और फिर उन्हें दैवीय, या नागरिक, दंड भुगतना न पड़े।

लेकिन, झालर भी एक संकेत थे, पवित्रता का संकेत। और भी अधिक विशेष रूप से, वे कुलीनता के एक उपाय और पुरोहित सेवा के एक उपाय का प्रतीक थे, जिसे हर इस्राएली को सम्मान देना था और उसे बनाए रखने की अपेक्षा भी थी। झालर को समझने की कुंजी यह है कि वे दो अलग-अलग प्रकार की सामग्री से बने कपड़े पहनने वाले आम इस्राएलियों के खिलाफ प्रतिबंध के अपवाद थे। कानून यह था कि कोई भी व्यक्ति ऊनी कपड़े पहन सकता था या वे सभी लिनन पहन सकते थे, लेकिन दोनों को मिलाया नहीं जा सकता था। हालाँकि, चूँकि लेवी की गोत्र को इस्राएल से अलग कर दिया गया था, और उन्हें परमेश्वर के नामित सेवकों और पुजारियों के रूप में एक विशेष कर्तव्य सौंपा गया था, इसलिए उच्च पुजारी और सामान्य पुजारियों के पास ऊन और लिनन के मिश्रण से बने कपड़ों की कुछ वस्तुएँ थीं; सामग्रियों का यह मिश्रण, इब्रानी में, शा' अत्नेज़ है।

झालर एकमात्र ऐसी वस्तु थी जिसे आम इस्राएली पहन सकते थे, जो शा' अत्नेज़ थी। और, यह अपनी तरह की एकमात्र वस्तु थी जिसे तम्बू के मैदान के बाहर पहना जा सकता था। इसका कारण यह कानून है कि किसी भी पवित्र वस्तु का उपयोग केवल मंदिर के परिसर में ही किया जा सकता है (या मूसा के दिनों में, जंगल के तम्बू)। किसी भी तरह की पवित्र वस्तुओं को तम्बू या मंदिर के प्रांगण के भीतर ही रहना पड़ता था, क्योंकि वह एकमात्र पवित्र भूमि थी। यदि कोई पवित्र वस्तु पवित्र परिसर के बाहर ले जाई जाती थी, या पहनी जाती थी, तो वह वस्तु अपवित्र हो जाती थी। लेकिन, इसका उल्टा भी सच था और इससे भी उतना ही सावधान रहना पड़ता था। कोई भी सामान्य वस्तु जो परमेश्वर को चढ़ाई जाती थी, या परमेश्वर की सेवा में इस्तेमाल की जाती थी, पवित्र हो जाती थी। और, इसने अपनी समस्याओं और परिणामों का एक सेट प्रस्तुत किया।

अब, जब हम गिनती के अगले अध्यायों में आगे बढ़ेंगे, तो हम गिनती 15 में पाए गए इन सिद्धांतों में से कई को लागू होते हुए पाएँगे।

गिनती अध्याय 16,17 और 18 एक इकाई हैं। वे वास्तव में एक लंबी कहानी हैं, जिसे ईसाई विद्वानों ने बहुत पहले छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित किया था जिन्हें हम अध्याय कहते हैं। हालाँकि, मेरे विचार से यह कहानी बहुत अधिक खंडित हो जाती है, अगर हम इकाई का पहला अध्याय पढ़ते हैं, और बाद में अगला, और बाद में तीसरा। इसलिए हम आज बिना किसी टिप्पणी या अध्ययन के सभी 3 अध्यायों को क्रमिक रूप से पढ़ने का असामान्य तरीका अपनाने जा रहे हैं।

फिर जब हम उन्हें पढ़ लेंगे तो हम वापस जाएँगे और इन आयतों में होने वाली सभी घटनाओं का विश्लेषण करना शुरू करेंगे।

शुरू करने से पहले मैं आपको इन अध्यायों के बारे में थोड़ा परिचय देना चाहता हूँ, ताकि आपको पता चल सके कि आपको क्या देखना है। मूल रूप से यह सब पुरोहिताई की अपरिहार्य प्रकृति और उद्देश्य तथा इस्राएल के राष्ट्रीय जीवन में पुरोहिताई के लिए निर्धारित अडिग स्थान के बारे में है। और लेवी के गोत्र के पास श्रेष्ठ पवित्रता का वह विशेष स्थान है, जिसमें लेवी के भीतर उप-समूह जिसे पुरोहिताई कहा जाता है, पवित्रता पदानुक्रम के शिखर पर है, यह कानून के माध्यम से और ईश्वर द्वारा निर्धारित पवित्रता पदानुक्रम के विरुद्ध विद्रोह की कहानी सुनाने के माध्यम से प्रदर्शित किया जाएगा।

जब यहोवा ने मूसा को माउंट सिनाई पर पहली बार कानून दिया तो वे इस्राएल के लोगों के लिए आदर्शवादी सिद्धांत थे। न केवल वे कानून ज्यादातर करने और न करने, अनुष्ठानों और धार्मिक क्रिया, अपराधों और दंडों की एक लंबी सूची थे, जिन्हें इस्राएल के पालन के लिए निर्धारित किया गया था, लेकिन वे न तो यह समझते थे कि ये रोजमर्रा की जिंदगी पर कैसे लागू हो सकते हैं, न ही (कई मामलों में) उन्हें पहले स्थान पर ये चीजें क्यों करनी थीं (या नहीं करनी थीं)। इसके अलावा उनमें से एक बड़ा हिस्सा इस्राएल के वादा किए गए देश में रहने के बिना भी नहीं माना जा सकता था (वास्तव में कुछ कानूनों की शुरुआत में "देश में प्रवेश करने के बाद" शब्द भी थे)। इन अजीब नियमों में से कुछ (कम से कम वे विशिष्ट मध्य पूर्वी समाज के लिए अजीब थे) किस संभावित उपयोगी उद्देश्य को पूरा कर सकते थे? इनमें से बहुत से आदेश और अध्यादेश मनमाने और मनमौजी और बहुत कठिन लगते थे।

यह कुछ वैसा ही है जैसे हम किशोर थे और अपने पहले ड्राइवर लाइसेंस की तैयारी कर रहे थे। हमें ट्रैफिक कानूनों के बारे में एक छोटी सी किताब पढ़नी थी और उसे इतने लंबे समय तक याद रखना था कि हम टेस्ट पास कर सकें ताकि हम अपना लाइसेंस प्राप्त कर सकें और वयस्कता में प्रवेश करने के उस अमेरिकी संस्कार में भाग ले सकें: कार चलाना। लेकिन इन ट्रैफिक कानूनों का उद्देश्य अक्सर हमारे लिए एक रहस्य था। वास्तव में उनमें से कई हास्यास्पद लगते थे इसलिए जब हमें आखिरकार अपना लाइसेंस मिला और हमने बिना माँ या पिताजी के साथ बैटे गाड़ी चलाना शुरू किया तो हमने उनका पालन करने की कोई योजना नहीं बनाई। हममें से ज्यादातर लोगों को संदेश मिलने से पहले कई टिकट, फंडर बंडर और बीमा दरों में बढ़ोतरी का सामना करना पड़ा कि (क) ये कानून वास्तविक हैं, न कि केवल सिद्धांत, तथा (ख) इन कानूनों

का उल्लंघन करने के परिणाम चाहे हम उन्हें बुद्धिमानीपूर्ण समझें या मूर्खतापूर्ण.... कष्टदायक से लेकर गंभीर तक हो सकते हैं।

दूसरे शब्दों में, सिद्धांत से वास्तविकता की ओर बढ़ने के लिए सिद्धांतों को व्यवहार में लाना होगा। यदि इस्राएल को कानून दिया गया होता और फिर वे बस माउंट सिनाई के तल पर बैठे रहते; यदि वे हर दिन परमेश्वर द्वारा प्रदान किए गए मन्ना को इकट्ठा करते, हर सुबह उस राजसी पर्वत की चोटी को देखते जिस पर कानून दिया गया था, और शांति और चुपचाप से अपने झुंड और पशुओं को पालते, तो कानून का अधिकांश हिस्सा उनके लिए सिर्फ सिद्धांत ही रह जाता। उन्हें आगे बढ़ने, जीवन का अनुभव करने, रोजमर्रा की परिस्थितियों से निपटने, कठिनाइयों और चुनौतियों का सामना करने, कठिनाइयों को सहने, ठोकर खाने और गिरने, और कठिन और कम-से-कम-स्पष्ट-कट विकल्प बनाने की आवश्यकता थी ताकि इन दिव्य सिद्धांतों की बुद्धि और उद्देश्य वास्तविक बन सकें और इस्राएलियों को यह सीखने की आवश्यकता थी कि उन्हें कैसे लागू किया जाए ताकि परमेश्वर की आज्ञाएँ उनके मन और हृदय में एक निश्चित विषय बन जाएँ।

तो यह प्रभु के साथ हमारे ईसाई चलने के लिए है। यह एक यात्रा है, बैठना नहीं। अगर हम यीशु को स्वीकार करते हैं और फिर कभी आगे नहीं बढ़ते हैं, जोखिम उठाते हैं, ऐसे रास्ते अपनाते हैं जो थोड़े डरावने लगते हैं, अगर हम सिर्फ गर्मजोशी, और प्रावधान, और आराम के अलावा कुछ नहीं वाली जगह पर रहते हैं, तो मसीहा जो हमें बताना चाहते हैं, वह ज्यादातर सिद्धांत बनकर रह जाएगा। एक अच्छा विचार; एक गर्मजोशी और सुखद एहसास।

यह केवल तभी संभव है जब हम आगे बढ़कर उन ईश्वरीय सिद्धांतों को व्यवहार में लाते हुए आगे बढ़ते हैं, तभी वे हमारे लिए वास्तविक बनते हैं और हम उनके उद्देश्य और पूर्णता को देखना शुरू करते हैं। यह हमारे अनुभव ही हैं जो हमारे भरोसे को मजबूत करते हैं और हमारे विश्वास की पुष्टि करते हैं।

हम जो कहानी पढ़ने जा रहे हैं, वह इस्राएल के लोगों द्वारा परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह की श्रृंखला में से एक और विद्रोह से शुरू होती है। ओह, वे इसे यहोवा के विरुद्ध विद्रोह के रूप में नहीं देखते हैं, वे इसे केवल मनुष्यों मूसा और हारून के विरुद्ध विद्रोह के रूप में देखते हैं। और यह धारणा कितनी गलत है, जैसा कि उन्हें जल्द ही पता चल जाएगा।

जब हम इस कहानी को पढ़ते हैं तो हमेशा ध्यान रखें कि मूसा मानवजाति और स्वयं के बीच परमेश्वर का मध्यस्थ है, और हारून परमेश्वर का महायाजक है जो एक और (लेकिन थोड़ा निम्न श्रेणी का) मध्यस्थ है। इसे इस तरह से सोचें: मूसा पुराने नियम में मसीहा यीशु के समतुल्य

है। अब, बेशक, उस सादृश्य को केवल इतनी दूर तक ही ले जाया जा सकता है लेकिन उनका प्राथमिक सामान्य गुण यह है कि मूसा और यीशु दोनों ही परमेश्वर द्वारा नियुक्त मध्यस्थ थे। उनके पास एक विशेष दर्जा था जो किसी अन्य व्यक्ति के पास नहीं था, या कभी नहीं होगा। और जिस तरह हमारे समय में बहुत से सहिष्णु लोग यीशु के प्रति सम्मान की बात करते हैं लेकिन मध्यस्थ और उद्धारकर्ता के रूप में उनकी विशेष भूमिका में विश्वास नहीं करते हैं, उसी तरह मूसा के दिनों के इस्राएलियों के पास आम तौर पर एक मानवीय नेता के रूप में मूसा के प्रति सम्मान था, लेकिन कई लोग अभी भी एक दिव्य रूप से नियुक्त मध्यस्थ के रूप में उनकी सर्वोच्च और अप्राप्य स्थिति को नहीं समझ पाए थे। मूसा द्वारा धारण किए गए श्रेष्ठ पद को समझने में विफलता ने कई इस्राएलियों को अपने जीवन की कीमत चुकानी पड़ी।

**आइये गिनती के अध्याय 16,17 और 18 को पढ़ें।**

**गिनती पढ़ें अध्याय 16,17,18 सभी (क्रमिक रूप से)**

जैसा कि हम अध्याय 16 में हैं, हमारे पास ऐसे लोग हैं जो 10 मण्डली की रिपोर्टों से हतोत्साहित हो गए हैं, डर के कारण विद्रोह कर रहे हैं और परिणामस्वरूप यहोवा लोगों को जंगल में वापस भेजकर दंडित करता है, और कम से कम कहने के लिए, कई लोग भ्रमित और दुखी रहते हैं। इसके अलावा, ईश्वर द्वारा आदेशित कर्तव्यों का विभाजन हुआ है और स्थिति में भी परिवर्तन हुआ है। इस्राएल के भीतर रैंक और व्यवस्था की स्थापना जिसने कुछ लोगों को ऊपर उठाया और दूसरों को नीचे गिराया। स्थिति तनावपूर्ण है और नियंत्रण से बाहर होने लगी है; और वे लोग जो मूसा के नेता और सहायक माने जाते थे, अब नेता-विरोधी बन गए हैं और वे विद्रोह को बढ़ावा दे रहे हैं। जैसा कि हम सभी ने देखा है, अगर उनका हिस्सा नहीं है, तो घबराहट या निराशा के कगार पर लोगों को, हम जानते हैं कि वे आसानी से उन लोगों के बहकावे में आ जाते हैं जो इन डरों का इस्तेमाल व्यक्तिगत एजेंडे और सत्ता की छिपी इच्छाओं को पूरा करने के लिए करते हैं। और इस बढ़ती अराजकता में कोरह, दातान और अबीराम कदम रखते हैं, उनका लक्ष्य इस्राएल के सत्ता केंद्र, पुरोहिताई पर नियंत्रण करना है। यह सहयोगियों का एक दिलचस्प मिश्रण है; कोरह कोहाथ की वंशावली से एक लेवी है। दूसरी ओर दातान और अबीराम रुबेन के गोत्र से हैं। तो यह असंभव दिमाग वाला ट्रस्ट एक साथ कैसे आता है? वे इस्राएली छावनी के दक्षिणी भाग में एक साथ डेरा डाले हुए हैं। वे एक दूसरे के ठीक बगल में रहते थे और इस प्रकार उनके जीवन मिश्रित थे। निश्चित रूप से लेवी लोग अधिक आंतरिक, और इसलिए पवित्र, जनजातियाँ

और कुलों के घेरे में रहते थे जो तम्बू को घेरते और उसकी रक्षा करते थे। लेकिन निकटता ने स्पष्ट रूप से इन दोनों समूहों को निरंतर संपर्क में ला दिया।

फिर भी तख्तापलट की कोशिश में केवल ये ही शामिल नहीं थे, हमें आयत 2 में बताया गया है कि इस्राएल के 250 अन्य लोग विभिन्न अन्य गोत्रों के नेता कोरह, दातान और अबीराम के साथ थे। हालाँकि, इस विवरण से यह स्पष्ट है कि यह लेवी कोरह ही मुख्य भड़काने वाला है।

थोड़ी देर में हम देखेंगे कि रुबेन के दातान और अबीराम का एजेंडा कोरह से थोड़ा अलग था। लेकिन फिलहाल वे मूसा और हारून के खिलाफ अपने आरोपों में एकजुट हैं, जिन्हें आम तौर पर एक टीम के रूप में देखा जाता है (आखिरकार वे भाई हैं)। और उनका आरोप है कि मूसा और हारून ने खुद के लिए बहुत अधिक शक्ति ले ली है और बहुत सारे नियम बनाए हैं जो उन्हें और उनके परिवारों को दूसरों से ऊपर रखते हैं। वे यह भी दावा करते हैं कि वे स्वयं नियुक्त थे। लेकिन यह और भी आगे जाता है और वे जो दावा करते हैं वह अध्याय 15 के अंत में **झालर** के बारे में जो हमने पढ़ा है उसका सीधा परिणाम है।

अब तक पूरा या ज़्यादातर इस्राएल **झालर** पहन रहा था। और कुछ लोगों के लिए यह उनके सिर पर चढ़ गया। उन्होंने स्पष्ट रूप से समझ लिया (हालाँकि एक विकृत तरीके से) कि **झालर** पहनने से उन्हें कुलीनता और पुरोहिती का दर्जा मिला; और अब वे इसका लाभ उठाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने कहा, "हे मूसा, पूरा समुदाय पवित्र है, सिर्फ तुम और हारून ही नहीं।" उन्होंने (स्वार्थपूर्ण कारणों से) यह निष्कर्ष निकाला कि **झालर** पहनने से अब वे पुरोहिती और मूसा के बराबर दर्जा प्राप्त कर चुके हैं गलत।

अब हम यह देखना शुरू करते हैं कि लेवी, कोरह, ही क्यों इस हमले का नेतृत्व कर रहा था। कोहाथ के कुल से एक लेवी के रूप में, कोरह पुजारी बनने के योग्य नहीं था। पुजारियों के पास सबसे अधिक अधिकार और उच्च दर्जा होता था और इसलिए कोरह ईर्ष्यालु था। उसके कुल का कोई भी व्यक्ति पुजारी बनने के योग्य नहीं था। मैं आपको याद दिला दूँ कि जिस तरह लेवी का पूरा गोत्र इस्राएल से विभाजित और अलग हो गया था, उसी तरह लेवी गोत्र भी दो समूहों में विभाजित और अलग हो गया था: पुजारी (जो केवल हारून के वंश से आते थे), और शेष लेवी जो पुजारियों के लिए काम करते थे। वे शेष लेवी जिनमें कोरह भी एक था, पहरेदार, संगीतकार, और तम्बू के परिवहनकर्ता थे जब यह चलता था, और तम्बू के मैदानों के रख-रखाव कर्मचारी थे। लेकिन वे कभी भी अनुष्ठान नहीं कर सकते थे या पुजारी की पोशाक नहीं पहन सकते थे या अभयारण्य तम्बू में प्रवेश नहीं कर सकते थे, ये सभी गतिविधियाँ सामान्य लेवियों के लिए अनुमत

उच्च दर्जा प्रदर्शित करती थीं। अतः गिनती से आगे जब हम बार-बार वाक्यांश “लेवीय और याजक” पाते हैं तो यह एक ही बात कहने के दो तरीके नहीं हैं, यह दो अलग-अलग समूहों की बात कर रहा है जिनमें से प्रत्येक की स्थिति का स्तर अलग-अलग है, और इसलिए पवित्रता की ढाल अलग-अलग है।

इसलिए मूसा ने तुरंत ही पुरोहिताई की श्रेष्ठ पवित्र स्थिति बनाम शेष लेवियों की निम्न पवित्र स्थिति, तथा सामान्य इस्राएलियों की निम्न पवित्र स्थिति को प्रदर्शित करने के साधन के रूप में एक परीक्षण की योजना बनाई यहाँ तक कि झालर पहनने के नए अधिकृत अधिकार के साथ भी। और, परीक्षण यह है कि प्रत्येक को जलते हुए कोयले और धूपबत्ती से भरे अग्निपात्र, सेंसर लाने हैं, और उन्हें पवित्र स्थान के तम्बू के द्वार पर प्रभु को प्रस्तुत करना है। मूसा ने कोरह और उसके अनुयायी को यह बताकर इसमें एक चेतावनी शामिल की कि यह मूसा और हारून नहीं हैं जिन्होंने अपने अधिकार का अतिक्रमण किया है, यह वे लोग हैं जिन्होंने यहोवा द्वारा इस्राएल के नेताओं के रूप में स्थापित किए गए लोगों को चुनौती देने के लिए आगे कदम बढ़ाया है।

परीक्षण का तरीका यह है कि परमेश्वर उन लोगों को प्रवेश की अनुमति देगा (संभवतः पवित्र स्थान के अंदर, तम्बू के सामने वाले कमरे में) जिनकी धूप वह स्वीकार करता है। दूसरे शब्दों में, कोरह चाहता है कि वह और उसके लोग पुजारी बनें, और एक पुजारी का मुख्य संकेत यह है कि वह पवित्र तम्बू के अंदर जाने में सक्षम होने के माध्यम से परमेश्वर तक पहुँच प्राप्त करता है।

अब यह पहले से ही व्यवस्था में स्पष्ट कर दिया गया है कि केवल याजक ही प्रभु को धूप चढ़ा सकते हैं, और कोई भी अन्य व्यक्ति जो ऐसा करने का प्रयास करता है, वह अपने जोखिम पर ऐसा कर रहा है। पद 9 में मूसा कोरह और उसके पीछे चलने वाले लेवियों को याद दिलाने की कोशिश करता है कि परमेश्वर ने उन्हें पहले से ही इस्राएल से अपने सेवकों के रूप में चुने जाने और अलग किए जाने में एक बड़ा सम्मान दिया है, और याजकों के प्रति उनकी सेवा उसके प्रति सेवा के समान ही है। और वे लेवीय, यहाँ तक कि सबसे निम्न कार्य करने वाले भी, अन्य इस्राएली गोत्रों के किसी भी सदस्य से पवित्रता और विशेषाधिकार में एक कदम ऊपर हैं।

फिर पद 12 में कहानी एक नया मोड़ लेती है। मूसा ने कोरह के अपराध में भागीदार दातन और अबीराम को बुलाया, जो रूबेन के गोत्र के सदस्य थे और स्वाभाविक रूप से वे विद्रोही थे। यहाँ हम देखते हैं कि उनके पास एक मुद्दा है जो हारून से ज़्यादा मूसा के साथ है। कोरह याजक बनना चाहता था और हारून के उच्च याजक के पद के पीछे था। दातन और अबीराम

मूसा के पद के पीछे थे। याद करें कि दातन और अबीराम के गोत्र के संस्थापक रुबेन याकूब के असली ज्येष्ठ पुत्र थे और परंपरा के अनुसार याकूब की मृत्यु के बाद उन्हें इस्राएल का नेतृत्व सौंप दिया जाना चाहिए था।

और फिर सबसे अधिक ईशानिदापूर्ण प्रतिक्रिया में (जो दर्शाता है कि वे ईश्वर और इस्राएल के लिए उनकी योजनाओं से कितने दूर थे) वे मूसा से कहते हैं कि यह कनान नहीं है जो दूध और शहद से बहने वाली भूमि है, बल्कि मिश्र है। और मूसा ने उन्हें मिश्र से केवल इसलिए बाहर निकाला था ताकि वह उन पर प्रभुत्व जमा सके (कुछ ऐसा जो वह वहाँ नहीं कर सकता था)। फिर यह उस समय के मुहावरे के साथ समाप्त होता है जिसमें कहा गया है, "तुम लोगों की आँखें निकाल लो"। यह मुहावरा हमारे आधुनिक "आँखों पर पट्टी बाँधना" से मेल खाता है। यानी, वे मूसा पर कनान में बेहतर जीवन और मातृभूमि की संभावना के बारे में लोगों को धोखा देने का आरोप लगा रहे हैं।

ईसाई धर्म में अक्सर कहा जाता है कि एक "अक्षम्य पाप" पवित्र आत्मा की निंदा करना है और सदियों से इस बात पर गरमागरम बहस चल रही है कि "पवित्र आत्मा की निंदा का क्या मतलब है। मुझे यकीन नहीं है कि मैं आपको बता सकता हूँ, हालाँकि, मेरा मानना है कि हमें बस एक पैटर्न दिया गया है, अगर एक सीधा उदाहरण नहीं है, तो यह कि वह अक्षम्य पाप कार्रवाई में कैसा दिखता है।

यहोवा ने इस्राएल को पहले ही छुड़ा लिया है। काम पूरा हो चुका है और इस्राएल अब मिश्र के दुश्मनों के हाथ में नहीं है। लेकिन अब सुरक्षित रूप से परमेश्वर के हाथों में है और उसके नियुक्त मध्यस्थ मूसा द्वारा नेतृत्व किया जा रहा है। इस्राएल में ये विद्रोही नेता कहते हैं कि वे अपना उद्धार वापस देना चाहते हैं, और दुश्मन के हाथों में वापस जाना चाहते हैं। मुझे लगता है कि आप समझ गए होंगे कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। विश्वासियों के रूप में जब हम अपना उद्धार स्वीकार करते हैं, तो कई नया नियम अंश यह स्पष्ट करते हैं कि हम अपनी इच्छा से, उस उद्धार को वापस दे सकते हैं। गलती से नहीं। कोई अज्ञात पाप करके नहीं। लेकिन अपने मन में यह निश्चय करके कि हम वही चाहते हैं जो शत्रु हमें दे सकता है, और अतीत में दे चुका है (हमारे उद्धारकर्ता और परमेश्वर ने हमें जो दिया है, उससे भी अधिक)। हालाँकि यह पवित्र आत्मा की निंदा करने का कुल योग नहीं हो सकता है, लेकिन यह कम से कम एक अच्छा उदाहरण है।

देखो; शैतान हमेशा हमें लुभाता रहता है और फिर जब हम उसके प्रलोभनों में पड़ जाते हैं तो हम पर आरोप लगाता है। लेकिन उसका लक्ष्य सिर्फ हमारे लिए काँटा बनना नहीं है; प्रलोभन

सिर्फ हमें असफल होने और फिर बार-बार परमेश्वर के साथ सुलह करवाने का नहीं है, जिससे हम पागल हो जाएँ। उसका असली लक्ष्य हमें वापस पाना है।

उसका अंतिम लक्ष्य हमें यहोवा के प्रति अपनी निष्ठा त्यागने और उस शत्रु की अधीनता में वापस जाने का निर्णय लेने के लिए बाध्य करना है, जो हमें तब तक अपने पास रखता था, जब तक कि हम अपने उद्धार को स्वीकार करने का निर्णय नहीं ले लेते। और ऐसा इसलिए है क्योंकि जिस तरह से हम अपनी इच्छा से पहली बार यीशु के पास आए थे, उसी इच्छा से हमें अपने उद्धार को भी समर्पित करना चाहिए।

यह सोचकर हमें सिहरन होनी चाहिए कि हम क्या करते हैं जब हम, अपने दिल के गुप्त स्थानों में भी (जिसे परमेश्वर जानता है), कभी-कभी दुनिया के तरीकों और उसके सुखों और आराम की ओर वापस जाने की इच्छा रखते हैं, जिसके हम आदी थे। या लगभग उतना ही बुरा, दुनिया के उन तरीकों को मिलाना जिनका हमने इतना आनंद लिया है, परमेश्वर के राज्य के तरीकों के साथ।

कोरह ने अपने छुटकारे को अस्वीकार कर दिया। कोरह ने परमेश्वर के पुरोहिताई को अस्वीकार कर दिया, जो प्रायश्चित का एकमात्र साधन था। इसलिए कोरह ने अपने पापों के लिए प्रायश्चित करने के परमेश्वर के तरीके को भी अस्वीकार कर दिया। दातान और अबीराम ने भी अपने छुटकारे को अस्वीकार कर दिया। उनके साथ ही कई दर्जन अन्य लोगों ने भी इसे अस्वीकार कर दिया। हम यह जानने वाले हैं कि हमारे छुटकारे को अस्वीकार करने से हमें क्या मिलता है।

लेकिन, इस सप्ताह के समापन से पहले, मुझे एक बात बताने की अनुमति दें: ध्यान दें कि दातान और अबीराम रूबेन के गोत्र के थे। रूबेन स्वाभाविक रूप से इस्राएल का ज्येष्ठ पुत्र था, और सभी अधिकारों के अनुसार उसे इस्राएल का स्वाभाविक नेता और अधिकार होना चाहिए था। लेकिन, कुछ सौ साल पहले, याकूब ने रूबेन को अस्वीकार कर दिया और उसे दरकिनार कर दिया और ज्येष्ठ पुत्र का अधिकार यहूदा और यूसुफ को दे दिया, क्योंकि रूबेन याकूब की रखैल के साथ सो गया था। रूबेन के इन वंशजों ने इतने समय के बाद भी याकूब के माध्यम से दी गई परमेश्वर की इच्छा को स्वीकार नहीं किया था कि वे इस्राएल का नेतृत्व नहीं करेंगे। 2 शताब्दियों से अधिक समय से चली आ रही कड़वाहट उबल रही थी। कोरह, दातान और अबीराम के लिए समस्या यह है कि परमेश्वर ने इसे व्यक्तिगत रूप से लिया और ऐसा होने पर कभी भी कुछ अच्छा नहीं होता।